सतनामी समाज के बदले हुए पारिवारिक एवं वैवाहिक प्रतिमान : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (बिलासपुर नगर के विशेष संदर्भ में)

✧ अशोक कुमार भारद्वाज
☛ डॉ. श्रीमती साधना खरे

विवाह एवं परिवार मानव समाज की एक सार्वभौमिक और अपरिहार्य संस्था है। यह समाज के इतिहास में हमेशा रहा है, आदिम से लेकर आधुनिक तक सभी समाजों में है, परन्तु अलग-अलग समाजों में इसकी प्रकृति एवं स्वरूप भिन्न है क्योंकि सभी समाजों में सांस्कृतिक भिन्नता पायी जाती है, समय के साथ परिवार एवं विवाह के स्वरूप एवं प्रकृति में परिवर्तन होना आया है। वर्तमान समय में जो आर्थिक विकास एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं उससे परिवार एवं विवाह नामक संस्था के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत हुई हैं, इसके कारण इन संस्थाओं की संरचना और कार्यों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। परिवार एवं विवाह नामक संस्था में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन विगत कुछ वर्षों में तीव्र हुआ है। क्योंकि औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के कारण निरंतर परिवार एवं विवाह नामक संस्था में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। भारत में नगरीकरण में लगातार वृद्धि होने तथा नये नगरों के विकास से ग्रामीण जनता का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन से इन संस्थाओं में परिवर्तन की गति तीव्र हुई है। पश्चिमी समाजशास्त्रीय अध्ययन से शहरी जीवन की प्रकृति तथा ग्रामीण क्षेत्रों से शहर आने वाले प्रवासियों पर नगरीकरण के प्रभाव विषयक विवेचना में भी नगर के भीतर इसे सामाजिक सम्बन्धों में व्यक्तिगत शून्यता, टूटन, खालीपन, अंतर वैयक्तिक सम्बन्धों में अस्थायीपन लाने वाला बताया गया है।

आज संयुक्त परिवार संख्या में इतने कम हो रहे हैं कि सामाजिक संरचना में उनका कोई विशेष स्थान नहीं है। संयुक्त परिवार के रूढ़िग्रस्त और अंधविश्वासों से युक्त अशिक्षित संगठन को देखकर ही इससे दूर भागना हमारी दुर्बलता का प्रतीक है। भारतीय भौतिकवादी आदर्शों में तेजी से वृद्धि हो रही है, इसके फलस्वरूप परम्परागत मूल्यों की अवहेलना हो रही है। समाज में व्याप्त संगठन और विघटन का परिवार पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। आज आर्थिक, राजनीतिक, मनोरंजनात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा धार्मिक कारण व्यक्तियों की अभिव्यक्तियों, मूल्यों और व्यवहारों को बदलने में महत्त्वपूर्ण योग दे रहे हैं। विवाह के स्वरूप परिवर्तित हो रहे हैं और परिवार टूटकर छोटे परिवारों में परिवर्तित हो रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन भी सतनामी समाज के बदलते हुए पारिवारिक एवं वैचारिक प्रतिमानों में हो रहे वर्तमान परिवर्तनों पर आधारित है।

अध्ययन का उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन निम्न प्रमुख उद्देश्यों पर आधारित है–

1. सतनामी समाज के पारिवारिक एवं वैवाहिक प्रतिमानों को ज्ञात करना। 2. सतनामी समाज के परिवार का आकार तथा उनकी संरचना में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना। 3. सतनामी समाज के विवाह के स्वरूप तथा प्रकार में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना। 4. सतनामी समाज में पारिवारिक सत्ता तथा मुखिया की स्थिति में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना।
5. सतनामी समाज के मूल निवास स्थान में गतिशीलता एवं पैतृक सम्पत्ति की प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति–प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में बिलासपुर नगर का चुनाव किया गया है। यह राज्य का महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक एवं न्यायिक नगर है। यहाँ द.पू.म. रेलवे का जोनल मुख्यालय होने के साथ-साथ राज्य का हाईकोर्ट भी नगर में ही स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य के 18 जिलों में सातवाँ स्थान रखता है। ''बिलासपुर नगर की कुल जनसंख्या 2001 की जनगणनानुसार 229615 है। बिलासपुर नगर 55 वार्डों में विभाजित है। नगर के 63.68% जनसंख्या साक्षर है। नगर की कुल जनसंख्या में 19 प्रतिशत अनुसूचित जाति की जनसंख्या है, जिसकी साक्षरता का प्रतिशत केवल 27.70 है।''[1]

प्रस्तुत अध्ययन हेतु बिलासपुर नगर के सतनामी बाहुल्यता वाले वार्ड का चयन किया गया है, जिनमें से 120 इकाईयों का चयन निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है। तथ्यों के संकलन साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के द्वारा किया गया है।

अध्ययनगत उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि–

अध्ययनगत उत्तरदाताओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उत्तरदाताओं की आयु संरचना, लिंग, धर्म, व्यवसाय, मासिक आय, शैक्षणिक स्तर तथा परिवार को आकार एवं प्रकार को ज्ञात किया गया है जो निम्न तालिकाओं से स्पष्ट है। अध्ययनगत उत्तरदाताओं के आयु संरचना सम्बन्धी तथ्यों से यह ज्ञात हुआ है कि अधिकांश (35%) उत्तरदाता 36-45 आयु वर्ग के हैं। 25-35 आयु वर्ग के एवं 46 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के दोनों का प्रतिशत 32.5 एवं 32.5 है। अत: स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता युवा वर्ग से हैं। जिसे **तालिका क्रमांक 01** में देखा जा सकता है।

उत्तरदाताओं के लिंग सम्बन्धी विश्लेषण में यह स्पष्ट है कि अधिकांश (87.5%) उत्तरदाता पुरुष हैं जबकि महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत केवल 21.5% है। जो कि बदलते परिवेश में महिला सदस्यों का सामाजिक प्रगति को स्पष्ट करता है जिसको **तालिका क्रमांक 02** स्पष्ट करता है।

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्थिति सम्बन्धी अध्ययन से ये ज्ञात हुआ है कि 70% उत्तरदाता उच्च शिक्षित

✧ सहायक प्राध्यापक-समाजशास्त्र, पी.एन.एस. महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
★ प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

है, जबकि 17.50% उत्तरदाता मैट्रिक स्तर तक, 10% उत्तरदाता प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है तथा 2.5% उत्तरदाता अशिक्षित है। प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षित लोग नगर में ज्यादा रहते हैं। जिसे **तालिका क्रमांक 03** में देखा जा सकता है।

अध्ययनरत उत्तरदाताओं के व्यवसाय सम्बन्धी तथ्यों से ज्ञात हुआ है कि ज्यादातर (75%) उत्तरदाता नौकरी पेशा वाले हैं। जबकि 17.5% उत्तरदाता स्वयं के व्यवसाय से जुड़े हैं तथा केवल 7.5% उत्तरदाता मजदूरी करते हैं। उत्तरदाताओं के व्यवसायिक विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि नौकरी पेशा उत्तरदाता नगरों में अधिक रहते हैं। **तालिका क्रमांक 04** इसे स्पष्ट करता है।

उत्तरदाताओं के आय सम्बन्धी अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि अधिकांश (65%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 4000-6000 के मध्य है, 30% उत्तरदाताओं की मासिक आय 8000 रुपये तक .5% की 10000 रुपये व इससे अधिक है। जिसका विवरण **तालिक क्रमांक 05** में दिया गया है।

अध्ययनगत उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्थिति सम्बन्धी विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश (80%) उत्तरदाता विवाहित है, 12.5% उत्तरदाता अविवाहित है, जबकि 5% उत्तरदाता विधवा व 25% उत्तरदाता विधुर है। अत: स्पष्ट है कि विवाह नामक संस्था की प्रासंगिकता आज भी महत्त्वपूर्ण है। जिसे **तालिका क्रमांक 06** स्पष्ट करती है।

उत्तरदाताओं के मूल निवास सम्बन्धी विवेचना से यह स्पष्ट है कि ज्यादातर (65%) उत्तरदाता की निवासीय पृष्ठभूमि ग्रामीण है, जबकि 30 नगर से तथा 5 उत्तरदाता कस्बा से सम्बन्धित है। ग्रामीण पृष्ठभूमि से सम्बन्धित होकर भी अधिकांश उत्तरदाताओं का नगर में निवास करना नगरीय प्रवास को स्पष्ट करता है। जो कि **तालिका क्रमांक 07** में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष :—परिवार एवं विवाह नामक संस्था समाज की मूलभूत इकाई है, जो कि समाज के निर्माण का आधारभूत तत्त्व होती हैं। परिवार का आकार, स्वरूप, पारिवारिक सत्ता, वैवाहिक प्रतिमान, सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य, स्त्रियों की स्थिति, पारिवारिक सम्बन्धों आदि में परिवर्तन हो रहा है। अत: पारिवारिक एवं वैवाहिक प्रतिमान परिवर्तन की ओर अग्रसर हो रहे हैं, आधुनिक विकासशील आर्थिक संरचना और नगरीय विकास की प्रक्रिया की पृष्ठभूमि जटिलताओं, कठिनाइयों से गुजर रही है। परिवर्तनशील परिस्थितियों और औद्योगिक समाज की नयी-नयी अपेक्षाओं के साथ अभियोजन का अनुभव करने में इस व्यवस्था को कठिनाइयों से होकर गुजरना पड़ रहा है।

व्यक्तिवादिता विवाह और परिवार से सम्बन्धित नवीन मूल्यों और आधुनिक जीवन की बढ़ती समस्याओं ने भी परिवार एवं विवाह नामक संस्था के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। अत: आधुनिक युग में सतनामी समाज के पारिवारिक एवं वैवाहिक मूल्यों, प्रतिमानों का नवीनीकृत स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है।

तालिका क्रमांक 01
उत्तरदाताओं की आयु संरचना

क्रमांक	आयु (वर्षों में)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	25-35	39	32.5
2.	36-45	42	35.0
3.	46 वर्ष से अधिक	39	32.5
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 02
उत्तरदाताओं की लिंग सम्बन्धी विवरण

क्रमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुरुष	105	87.5
2.	महिला	15	12.5
	योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 03
उत्तरदाताओं की शैक्षणिक संरचना

क्रमांक	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	स्नातकोत्तर	48	40.0
2.	स्नातक	36	30.0
3.	मैट्रिक	21	17.5
4.	प्रायमरी	12	10.0
5.	निरक्षर	03	2.5
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 04
उत्तरदाताओं की व्यवसाय

क्रमांक	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	नौकरी	90	75.0
2.	व्यापार	21	17.5
3.	मजदूरी	09	7.5
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 05
उत्तरदाताओं की मासिक आय

क्रमांक	मासिक आय (रु. में)	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	4000 से कम	60	50.0
2.	6000 तक	18	15.0
3.	8000 तक	36	30.0
4.	10000 या अधिक	06	5.0
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 06
उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

क्रमांक	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अविवाहित	15	12.5
2.	विवाहित	96	80.0
3.	विधवा	06	5.0
4.	विधुर	03	2.5
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 07
उत्तरदाताओं की निवास स्थान

क्रमांक	मूल निवास स्थान	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	गाँव	78	65.0
2.	नगर	36	30.0
3.	कस्बा	06	5.0
	कुल योग	120	100.0

तालिका क्रमांक 08
अध्ययनगत उत्तरदाताओं का पारिवारिक प्रतिमानों के प्रति विचार

क्र.	पारिवारिक प्रतिमान	दृष्टिकोण		योग
		वर्तमान में	एक पीढ़ी पूर्व	
1.	संयुक्त परिवार	81 (67.5)	120 (100)	
	एकांकी परिवार	39 (32.5)	- -	120 (100)
2.	परिवार में 1-4 सदस्य	30 (25)	- -	
	परिवार में 5 से अधिक सदस्य	90 (75)	120 (100)	120 (100)
3.	मुखिया का चयन का आधार			
	अ. शिक्षा	3 (2.5)	3 (2.5)	
	ब. अनुभव	3 (2.5)	3 (2.5)	
	स. आयु	102 (85)	105 (87.5)	
	द. तीनों	12 (10)	9 (7.5)	120 (100)
4.	मुखिया का पद पर बना रहना			
	अ. जीवन पर्यन्त	117 (95.5)	120 (100)	
	ब. सदस्यों के सहमति तक	3 (2.5)	- -	
	स. सही निर्णय लेने तक	- -	- -	120 (100)
5.	सम्पत्ति की संयुक्तता-हाँ	15 (12.5)	114 (95)	
	-नहीं	105 (87.5)	6 (5)	120 (100)
6.	पैतृक व्यवसाय 1. कृषि	93 (77.5)	117 (97.5)	
	2. मजदूरी	15 (12.5)	3 (2.5)	
	3. नौकरी	12 (10.0)	- -	
	4. व्यापार	- -	- -	120 (100)
7.	महिला सदस्यों की स्थिति			
	1. उच्चतम	15 (12.5)	6 (5)	
	2. मध्यम	105 (87.5)	111 (92.5)	
	3. निम्न	- -	3 (2.5)	120 (100)
8.	महिला सदस्यों की शिक्षा			
	1. हाई स्कूल	3 (3.5)	114 (95)	
	2. स्नातक	3 (2.5)	3 (2.5)	
	3. स्नातकोत्तर	105 (87.5)	3 (2.5)	
	4. तकनीकि शिक्षा	9 (7.5)	- -	120 (100)
9.	महिला सदस्यों को नौकरी कराना			
	हाँ	114 (95)	15 (12.5)	
	नहीं	6 (5)	105 (87.5)	120 (100)
10.	सम्पत्ति में कलह/ मुकदमेबाजी			
	हाँ	- -	111 (92.5)	
	नहीं	120 (100)	9 (7.5)	120 (100)

तालिका क्रमांक 09
अध्ययनगत उत्तरदाताओं का वैवाहिक प्रतिमानों के प्रति विचार

क्र.	वैवाहिक प्रतिमान	दृष्टिकोण		योग
		वर्तमान में	एक पीढ़ी पूर्व	
1.	विधवा पुनर्विवाह का प्रचलन			
	हाँ	9 (7.5)		
	नहीं	111 (92.5)	120 (100)	120 (100)
2.	परित्यक्तता विवाह			
	हाँ	21 (17.5)	15 (12.5)	
	नहीं	99 (82.5)	105 (87.5)	120 (100)
3.	बाल विवाह			
	हाँ	- -	30 (25)	
	नहीं	120 (100)	90 (75)	120 (100)
4.	अन्तर्जातीय विवाह			
	हाँ	30 (25)	- -	
	नहीं	90 (75)	120 (100)	120 (100)
5.	दहेज प्रथा का प्रचलन			
	हाँ	9 (7.5)	- -	
	नहीं	111 (92.5)	120 (100)	120 (100)
6.	लड़कियों के विवाह की आयु			
	1. 16 वर्ष	- -	96 (80)	
	2. 18 वर्ष	15 (12.5)	15 (12.5)	
	3. 20 वर्ष	51 (42.5)	9 (7.5)	
	4. 22 वर्ष या अधिक	54 (45)	- -	120 (100)

संदर्भ–

1. त्रिपाठी, चन्द्राकर – छत्तीसगढ़ का भूगोल, बिलासपुर प्रकाशन
2. आचार्य, हेमलता – कास्ट एंड जाइंट फेमिली इन एन एग्रीमेंट कम्युनिटी
3. अब्बी, बी.एल. – अर्बन फेमिली इन इंडिया, कंट्रीब्यूशन टू इंडिया, सोसियोलाजी न्यू सीरिज, 1969 नं. 3
4. डब्लू. जे. गुडे – दि फेमिली, प्रिंटिंग हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली 1954
5. पी. ओबेराय – फेमिली, मैरिज एण्ड किनशिप, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड, 1993